रूस-जापान युद्ध
(1904-05 ई०)

1904-05 ई० का रूस-जापान युद्ध एशिया और विश्व इतिहास में एक मील का पत्थर था। इसमें जापान जैसे छोटे एशियाई देश ने क्षेत्रफल में सबसे बड़े दुनिया के देश यूरोपीय देश रूस को हरा दिया।

युद्ध का कारण

रूस-जापान युद्ध का मुख्य कारण दोनों देशों के साम्राज्यवादी हितों का टकराव था। मंचूरिया, कोरिया, लियाओतुंग प्रायद्वीप का क्षेत्र इनमें मुख्य था।

चीन-जापान युद्ध (1894-95), शिमोनोसेकी की संधि -

इस युद्ध में जापान ने चीन को हरा दिया, दोनों के बीच 1895 में शिमोनोसेकी की संधि हुई, जिसके अनुसार जापान को चीन से लियाओतुंग का प्रायद्वीप प्राप्त हुआ, परन्तु रूस, फ्रांस और जर्मनी ने मिलकर जापान पर दबाव डालकर उसे तीन करोड़ अतिरिक्त टेल का हर्जाना लेकर लियाओतुंग प्रायद्वीप चीन को वापस लौटाने के लिए बाध्य किया। जिससे जापान बहुत अपमानित महसूस किया और विरोध कर रूस से बदला लेने के अवसर की ताक में लगा रहा।

आंग्ल-जापानी संधि 1902

1902 ई० में यूरोप के देश इंग्लैण्ड ने एशिया के देश जापान के साथ बराबरी के स्तर पर संधि की। इससे जापान को बहुत प्रतिष्ठा मिली। यह संधि मुख्य रूप से रूस के प्रसार को एशिया में रोकने के उद्देश्य से की गई थी। इस संधि से जापान का मनोबल बढ़ा और वह अपने आप को सुरक्षित महसूस करने लगा तथा उसने रूस के प्रति उग्र नीति का अवलंबन शुरू किया।

मंचूरिया का प्रश्न

मंचूरिया चीन के उत्तर में खनिज संसाधनों कोयला, लोहा और सोना से भरपूर क्षेत्र था। रूस-जापान दोनों इस पर अधिकार करना चाहते थे। रूस ने चीन से ट्रांस-साइबेरियन रेलवे

को उत्तरी मंचूरिया से व्लादीवोस्तक तक रेललाइन की अनुमति मिली। 1898 ई. में रूस ने चीन से लियाओतुंग प्रायद्वीप में पोर्ट आर्थर और डालरन को पच्चीस वर्ष के पट्टे पर हासिल कर लिया। पोर्ट आर्थर में रूस ने अपना सैनिक अड्डा बनाया तथा जंगी जहाजों को रखने के लिए किलेबंदी भी किया। 1900 ई. में चीन में बॉक्सर विद्रोह के दौरान सुरक्षा के नाम पर रूस ने अपनी सेना मंचूरिया में भेजा भी और बाद में उस पर कब्जा भी कर लिया।

जापान में मंचूरिया में रूस के बढ़ते प्रभाव से काफी चिंता हुई। यद्यपि 1902 के आंग्ल-जापानी संधि से उसका मनोबल ऊँचा हुआ। इस संधि से घबराकर रूस ने मंचूरिया से सेना वापस बुलाने की बात कही लेकिन वह टाल मटोल करता रहा। साथ ही रूस ने मास्को से पोर्ट आर्थर के बीच रेल लाइन बिछा दी एवं पूर्वी साइबेरिया में एक वायसराय की नियुक्ति की। वह मंचूरिया को एक रूसी प्रांत के रूप में दिखाना चाहता था।

कोरिया का प्रश्न

कोरिया का मुद्दा भी रूस-जापान के बीच तनाव का कारण था। जापान कोरिया पर कब्जा करना चाहता था। चीन-जापान युद्ध (1894-95) के बाद जापान कोरिया को आधुनिक बनाने के नाम पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था, लेकिन कोरिया की रानी ने उसका विरोध किया। जापान ने उसकी हत्या करा दी। जापान के खिलाफ कोरिया में विद्रोह हो गया। विद्रोह को दबाने के बहाने रूस ने कोरिया की राजधानी सियोल में अपनी सेना भेज दी। कोरिया का राजा रूसी दूतावास में शरण लेकर शासन करने लगा। इस प्रकार रूस कोरिया में अपना प्रभाव बढ़ाने लगा। इसी क्रम में जापान के प्रतिनिधि यामागाता ने रूस को प्रस्ताव दिया कि कोरिया को आपस में बांट लिया जाए, लेकिन रूस इसके लिए तैयार न होकर कोरिया पर दोनों देशों के संयुक्त संरक्षण का प्रस्ताव रखा। जापान के यामागाता और रूस के लोबानोफ के मध्य एक संधि हुई 1896 में। दोनों देश इसके अनुसार अपने सैनिक वापस कोरिया से वापस बुलाने तथा कोरिया में आर्थिक सुधार के लिए वहां की सरकार को मदद करने पर सहमति व्यक्त की।

रूस - जापान युद्ध

रूस अपने वादे पर टिका नहीं। उसने रूस से आमूर नदी पर स्थायी आधार तथा ... नदी पर खान खोदने का अधिकार प्राप्त कर लिया और कोरिया में अपना प्रभाव बढ़ाने लगा। जापान ने पुनः रूस के साथ समझौता कर दोनों देशों ने कोरिया की स्वतंत्रता और प्रादेशिक अखंडता को स्वीकार किया। लेकिन रूस ने संधि पर अमल नहीं किया और 20 हजार ~~[illegible]~~ आदमी आमूर नदी पर सैनिक भेज दिया। जापान ने रूस को पुनः 1903 में संधि का प्रस्ताव दिया कि मंचूरिया में रूस के विशेष हित और कोरिया में जापान के विशेष हित को स्वीकार करे लेकिन रूस इसके लिए राजी नहीं हुआ। 8 फरवरी, 1904 ई० को जापान ने पोर्ट आर्थर पर आक्रमण कर दिया, 10 फरवरी, 1904 ई० को रूस और जापान में युद्ध प्रारंभ हो गया।

दोनों पक्षों के मध्य जमीन और समुद्र दोनों में युद्ध हुआ। 2 जनवरी, 1905 को पोर्ट आर्थर पर जापान का कब्जा हुआ। 20 फरवरी से 16 मार्च 1905 ई० के मध्य मुकडेन का युद्ध हुआ। मुकडेन के युद्ध में रूस पराजित हुआ। 27 मई, 1905 को ~~[illegible]~~ के समुद्र में दोनों पक्षों में नाविक युद्ध हुआ। रूस के बारह हजार नाविक मारे गए। जापान के एक सौ सत्तासी आदमी मारे गए। अमेरिकी ~~[illegible]~~ राष्ट्रपति ~~[illegible]~~ थियोडोर रूजवेल्ट की मध्यस्थता से दोनों पक्षों के मध्य 'पोर्ट्समाउथ' की संधि हुई।

पोर्ट्समाउथ की संधि - 5 सितम्बर, 1905

(i) रूस ने कोरिया में जापान के प्रमुख राजनैतिक, सैनिक, आर्थिक हितों को स्वीकार किया।

(ii) दोनों (रूस और जापान) मंचूरिया से सेना वापस बुलाने की बात स्वीकार की।

(iii) रूस ने जापान को लियाओतुंग प्रायद्वीप का पट्टा तथा रेल तथा खानों पर अधिकार सौंप दिया।

(4)

(iv) साखालिन द्वीप का दक्षिणी भाग रूस ने जापान को दिया

(v) जापान को इन प्रदेशों में मछली पकड़ने का अधिकार मिला

(vi) दोनों एक-दूसरे के युद्धबंदियों का खर्च देना स्वीकार किया। जापान को लगभग दो करोड़ का लाभ हुआ।

(vii) दोनों देशों को मंचूरिया में रेलवे लाइन की सुरक्षा के लिए सेना रखने का अधिकार मिला।

(viii) मंचूरिया में खुले द्वार की नीति को स्वीकार किया।

(ix) रूस दोनों देशों ने आश्वासन दिया कि किलेबंदी नहीं करेंगे तथा मंचूरिया की रेलवे लाइन का सैनिक कार्य हेतु प्रयुक्त न करने की गारंटी स्वीकार की।

जापान पर प्रभाव — इस संधि से जापान की आकांक्षायें जिन्होंने शानदार विजय भी सफलता से पूरी नहीं हुई। रूजवेल्ट प्रशांत महासागर में शक्ति संतुलन स्थापित करने के लिए रूस की शक्ति को पूरी तरह खत्म नहीं करना चाहता था। फिर भी जापान को उन्नत प्रतिष्ठा मिली, नागरिक एकता स्थापित हुई। कोरिया को संरक्षित राज्य बनाकर जापान उस पर कब्जा कर लिया। मंचूरिया में जापान अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया। जापान में साम्राज्यवाद और सैन्यवाद का विकास हुआ। जापान का युद्ध में जापान के धन और जन की अपार क्षति हुई, फिर भी जापान पर युद्ध का सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

रूस पर प्रभाव — रूस की प्रतिष्ठा धूमिल, जारशाही की बदनामी। निरंकुश शासन के विरोध रूस में आवाज उठने लगी। पूर्वी एशिया में रूस के प्रभाव विस्तार पर रोक लगाने बाद रूस बाल्कन प्रायद्वीप में दखल देने लगा। इसके इस क्षेत्र में तनाव, बोस्निया संकट और बाल्कन युद्ध हुए। 1905 में रूस में क्रांति।

यूरोप पर प्रभाव — रूस का बाल्कन प्रायद्वीप में दखल देने से बोस्निया संकट और बाल्कन युद्ध। रूस और जर्मनी निकट आने लगे। इंग्लैंड के मन से रूसी भय निकला, बाद में आंग्ल-रूसी समझौता 1907 में।

एशिया पर प्रभाव — रूस के हारने से यूरोपीय अपराजेयता की मिथक टूट गया। यूरोपीय देश एशियाई देशों को श्वेत लोगों का बोझ समझते थे। एशियाई सांस्कृतिक पिछड़ेपन का बहाना बनाकर यूरोपीय देश एशियाई देशों पर शासन का हक जताते थे, वह टूट गया। चीन में आधुनिकीकरण पर जापान को देखकर प्रभाव डाला जागृति आयी। 1911 में चीनी क्रांति।

भारत पर प्रभाव — जापान की विजय ने भारत का मनोबल बढ़ा। शक्तिशाली जापान अमेरिका के लिए चिंता